ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 233-235

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

मूर्तिकार श्री अवतार सिंह पंवार

विभावरी सिंह

असि0 प्रोफेसर, मूर्तिकला विभाग–ललित कला संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय– लखनऊ (उ0प्र0), भारत

Received- 04.07.2020, Revised- 13.07.2020, Accepted - 17.07.2020 E-mail: drvibhavarisingh@gmail.com

सारांश : *प्रख्यात् मूर्तिकार श्री अवतार सिंह पंवार की कला यात्रा को प्रस्तुत करने का एक संक्षिप्त प्रयास है। यह कार्य उनके कलात्मक जीवन एवं रचनाओं का संक्षिप्त दर्शन मात्र है।*

मूर्तिकार श्री अवतार सिंह पंवार ने कला अभिव्यक्ति के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया है। वह रेखांकन एवं मूर्तिकला के सिद्ध हस्त कलाकार थे, आज भी उनके द्वारा बनाई गयी कलाकृतियों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस शोध में उनके कला क्षेत्र में योगदान एवं उपलब्धियों का संक्षेप वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– मूर्तिकार, कला यात्रा, कला अभिव्यक्ति, अविस्मरणीय , कलाकृतियों, महत्वपूर्ण स्थान, वर्णन ।

श्री अवतार सिंह पंवार एक सशक्त व सजीव अभिव्यंजना के मूर्तिकार एवं चित्रकार थे। वह दृढ़ संकल्पों पर जीने वाले व्यक्ति थे, उनका नाम कानों में पड़ते ही एक विशाल एवं बुलन्द व्यक्तित्व का चित्र सामने उभर कर आता है। जिन्होंने अपना सारा जीवन अपने सिद्धान्तों पर जिया। परिणाम की परवाह न करते हुए हमेशा सच का साथ दिया। मेरे शिक्षण कार्य में वह कला एवं शिल्प महाविद्यालय में मूर्तिकला विभाग के विभागाध्यक्ष थे। विभाग में उनके द्वारा किये गये कार्यों को देखकर हमें बहुत प्रेरणा मिलती थी। वह प्रातः 4.00 बजे ही विभाग आ जाते थे और जब महाविद्यालय का समय प्रातः 8.00 बजे का होता था, हमारे पहुँचने पर हम उन्हें अपने कार्यों में तल्लीन पाते थे। उनके द्वारा किये गये कार्य मुख्यतः पोट्रेट हमारे लिये बहुत ही प्रेरणा थे। अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होंने कार्य किया, छात्रों के साथ कार्य करना हंसी मजाक सब कुछ उनके साथ होता था। परन्तु कार्य करते समय वह एक अनुशासित शिक्षक की भॉति हमें कार्य सिखाते थे। वह हमेशा हमें बताते थे कि कला ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं को समाज के सामने ला सकते हैं। उनके बारे में जितना भी लिखा जाए कम है।

जन्म– श्री पंवार सर का जन्म 14 जनवरी, 1929 में टिहरी में हुआ। ये राज घराने के वंशज थे, घर के वातावरण से इनका मन सेवा में जाने का बहुत था, किन्तु एक बार टाइफाइड हो जाने से इनके कान की श्रवण शक्ति प्रभावित हो गई, इस कारण यह सेना में नहीं जा सके।

शिक्षा– आपको कला से अधिक स्नेह था इस कारण घर वालों ने पारिवारिक मित्र बैरिस्टर मुकुन्दी लाल की सलाह पर इन्हें शान्तिनिकेतन भेज दिया। जिस समय पंवार सर शान्तिनिकेतन से शिक्षा प्राप्त करने गये उस समय वहॉ भारतवर्ष के महान कलाकार नन्दलाल बोस, राम किंकर बैज, विनोन बिहारी मुखर्जी, विनायक राव मामोजी एवं सुरेन्द्र नाथकर मुख्य भूमिका में अध्यापनरत् थे और स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों में इस सभी गुरूओं का कला संस्कार आप पर पड़ा। उस समय चित्रण और मूर्ति दोनों विधाओं में सामान्तर कार्य करने वाले कलाकार बहुत थे, जिनमें श्री राम किंकर बैज भी थे। श्री अवतार सिंह जी को जहॉ अन्य गुरूओं का सानिध्य मिला, वहीं वह किंकर से अधिक प्रभावित होकर तूलिका के साथ–साथ मूर्ति रचना का कार्य भी करते रहे। यह कार्य इतना आसान नहीं था, जिस व्यक्ति ने बचपन से ही घोड़े, बंदूक और सैनिक छावनियों में पला बढ़ा हो और फौज में जाने का सपना देखा हो उसे एक अलग स्तम्भ में अपने आपको स्थापित कर लेना, परन्तु पंवार सर ने ऐसा किया। उनकी शिक्षा की शुरूआत रॉयल इंडियन मिलिट्री कॉलेज देहरादून व सेन्ट जार्जेज कॉलेज मंसूरी और प्रताप इण्टर कॉलेज टिहरी में हुई थी। पर शिक्षा का दूसरा छोर शान्तिनिकेतन था। शान्तिनिकेतन में एक कलाकार अवतार सिंह पंवार के नाम का उभर कर आया। पहाड़ों की छवि, घोड़े, बैल, भैंसे, बकरियॉ, तीतर, मुर्गे, कुत्ते आदि जो बाल्यावस्था में इर्द–गिर्द थे आत्मसात किया हुआ वातावरण और वह उनके चित्र और मूर्ति में उभरने लगे थे। शान्तिनिकेतन के कला वातावरण में और श्री राम किंकर बैज के मार्गदर्शन से उन्हें जीवन के वास्तविक लक्ष्य का दर्शन कराने लगा था।

ललित कला में डिप्लोमा व मूर्तिकला में विशेष प्रशिक्षण का कार्य कला भवन शान्तिनिकेतन से होने के साथ–साथ आपने एम.एस. युनिवर्सिटी बड़ौदा से भी आपने मूर्तिकला के नये आयामों का अध्ययन किया। 1974 में श्री

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

राम किंकर बैज ने एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने अपने तीन शिष्यों में श्री अवतार सिंह पंवार का नाम बहुत ही गर्व के साथ लिया था।

शांतिनिकेतन से दीक्षित होकर अवतार सिंह पंवार, श्री सुधीर रंजन खास्तगीर जी के आमंत्रण पर कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ आ गये। यहॉ आकर उन्होंने मूर्तिकला विभाग को सजाने–संवारने व स्थापित करने में अपना जीवन समर्पित कर दिया। श्री अवतार सिंह पंवार सिर्फ मूर्तिकला ही नहीं पढ़ाते थे, अपितु चित्रकला विभाग में टेम्परा माध्यम से भित्ति चित्रण की शिक्षा भी देते थे। लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय में यह विषय नया–नया था। पंवार सर वॉश तकनीक को भी उतने ही सिद्ध हस्त कलाकार थे जितने मूर्ति एवं रेखांकन के राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0 में संग्रहीत चित्र सुजाता, और ''काला घोड़ा'' इस विधा की उत्कृष्ट कलाकृतियॉ हैं। पंवार साहब म्यूरल व भित्ति चित्र रचना के लिए काफी विख्यात् हुए।

कलाकृतियॉः– श्री पंवार साहब द्वारा बनाई गई कृतियॉ देश के विभिन्न स्थानों पर स्थापित हैं। महान विभूतियों की मूर्तियॉ, उनके मूर्तिशिल्प की गुणवत्ता के प्रमाण हैं। यही नहीं बाग–बागीचों, पार्कों आदि को कलात्मक स्वरूप देने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लखनऊ शहर में हाथी पार्क, बुद्धा पार्क, सूरज कुण्ड पार्क, जू गार्डेन उनकी प्रतिभा का प्रतीक है।

लखनऊ उनकी कर्म भूमि की गाथा बना, वैसे तो उन्होंने अनगिनत रचनायें कीं परन्तु ठोस ज्यामितीय संयोजन, विशेष रूप से बैल आदि की पशु आकृति तथा लाइफ पोट्रेट के लिए वह देश के अद्वितीय कलाकार थे। पं0 जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गॉधी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, गोविन्द वल्लभ पंत, नवाब पटौदी, कपिल देव, पूर्व प्रधान मंत्री श्री चन्द्रशेखर, राम किंकर बैज, सुधीर रंजन खास्तगीर, बेगम अख्तर, अमिताभ बच्चन आदि की मुखाकृतियों में प्रबल भावों से उनकी रचना की। उन्हें विभिन्न प्रकार के स्ट्रोक्स से कार्य करने में महारथ हासिल थी, चाहे चित्र हो या मूर्ति पंवार साहब का रचना आधार यथार्थ ही होता था। माध्यमों के लिए उन्होंने सीमेन्ट, प्लास्टर व लकड़ी को प्रमुख रूप से अपनाया साथ ही टेराकोटा और कांस्य माध्यम में भी अनेक शैलीगत प्रयोग किये।

कला एवं शिल्प महाविद्यालय के बंगला नं0 '8' उनका निवास था। आपको कुत्ते, चिड़ियां, मुर्गे आदि का पालने का भी बहुत शौक था। महाविद्यालय में भी अनेक प्रकार के पक्षियों को देखा जा सकता है। इन सबको देखते हुए पंवार सर ने अपने स्केच और म्यूरल आदि में बहुत ही सुगमता सौर सुन्दरता के साथ बनाया है। पोट्रेट स्टैण्ड के ऊपर सिर के आकार की मिट्टी रखी होती थी और वह गीले टाट से ढका रहता था, जो काम करने के लिए तैयार होता था, जब पंवार साहब काम करने के मूड में होते थे तो अपने दोनों हाथों से त्वरित गति से अंगूठे से मिट्टी को दबाते और अपने दोनों हाथों का प्रयोग करते हुए अपने बोल्ड स्ट्रोक से मिट्टी को जीवित कर देते थे। आपके द्वारा बनाये गये ब्रांज और प्लास्टर में बने हैं। इनमें मदर और चाइल्ड, बांसुरी वादक, नन्दी खलिहान की ओर आदि हैं।

रेखांकन– पंवार साहब एक बहुआयामी कलाकार थे, ब्रश से स्केच, पेन्सिल लाइन एचिंग, सिल्क पर रेखांकन, मूंगा सिल्क पर काम, सिल्क पेन्टिंग आदि देखे जा सकते हैं। आपके द्वारा किये गये रेखांकन में स्ट्रोक गति दिखाई देती है। मुर्गे की लड़ाई के रेखांकन में मुर्गे की पेशियों का खिंचाव और पंजों में क्रूरता दिखाई देती है, बकरियों का चुलबुला पन, सांड़ की लड़ाई के विशेष क्षणों में आपके रेखांकन में देखा जा सकता है।

1953 में शांनिनिकेतन से गुरू राम किंकर बैज के निर्देशन में मूर्तिकला में विशेष प्रशिक्षण के उपरान्त आचार्य नन्द लाल बोस और कृपाल सिंह शेखावत् के निर्देशन में भित्ति चित्रण का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उपलब्धियॉं–1956 में पंवार सर कला एवं शिल्प महाविद्यालय के मूर्तिकला विभाग में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए और वहॉ से 1989 में विभागाध्यक्ष के पद से निवृत्त हुए।

1968 में पंवार साहब की कृति प्लास्टर व फेवीकोल को राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी से पुरस्कृत किया गया। 1967 में अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स कलकत्ता तथा 1963 में उ0प्र0 राज्य ललित कला अकादमी से आपकी कलाकृतियॉ पुरस्कृत हुईं। 1987 में इन्हें राज्य ललित कला अकादमी उ0प्र0 के सर्वोच्च सम्मान अकादमी अधिसदस्यता से विभूषित किया गया। कलाकृतियों के देश के विभिन्न क्षेत्रों में तथा अन्य राष्ट्रों में भी इनकी कला प्रतिभा आमंत्रित की गईं। श्री पंवार साहब स्पष्ट सोच के व्यक्ति थे उनका कहना था ''मैं अपनी भाषा की सोच को आधुनिक मानता हूँ वह यथार्थ भी हो सकती है और अमूर्त थी।''

PIF/5.002 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

श्री पंवार साहब ने जापान– हांगकांग बैंकाक आदि की यात्रायें भी कीं वहॉ भी उन्होंने प्रदर्शन व प्रयोग किये, किन्तु वह जीवन के हर दिन को कुछ नया सीखने की पाठशाला मानते थे।

1956 में दिल्ली, लखनऊ, महाबलीपुरम्, ग्वालियर, जम्मू कश्मीर, कोलकाता आदि नगरों की अनेक कला संस्थाओं द्वारा आयोजित की गई प्रदर्शनियों कला शिविरों आदि में आपकी सक्रिय भागीदारी रही।

सम्मान– आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0 को अधिसदस्यता सम्मान 1987 यश भारती सम्मान 1987 उ0प्र0 सरकार 1994 कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा कला भूषण सम्मान 1996 हिन्दी संस्थान उ0प्र0 द्वारा भारतीय फनकार सोसाइटी 1998 श्रेष्ठ कलाकार सम्मान आदि प्राप्त हुए। श्री अवतार सिंह पंवार आज भी जन मानस में तथा कला प्रेमियों में आज भी उनका काफी सम्मान है। वह कला एवं शिल्प महाविद्यालय के मूर्तिकला विभाग के स्तम्भ थे, जिन्हें कोई भी गिरा न सका। आपका देहावसान दिनॉक: 19 जुलाई, 2002 में आपके पैतृक निवास कोटद्वार में ह्रदय गति रूक जाने से हो गयी थी, जिससे कला जगत को बहत नुकसान हुआ है।

अन्त में मैं कहना चाहूँगी कि श्री अवतार सिंह पंवार जी के विषय में जितना भी लिखा जाये कम है, आप बहुत ही जिन्दा दिल और खुश तबीयत क व्यक्ति थे, आपको खाने और खिलाने का बहुत शौक था। समय–समय पर वह विभाग के छात्रों के साथ चाय समोसा, और आम के मौसम में आम मंगाकर स्वयं खाते थे और छात्रों को भी खिलाते थे। उनके सानिध्य में मैंने जो कुछ सीखा है, उसी के आधार पर आज मैं इस जगह पर हूँ। उनका आशीर्वाद आज भी मेरे साथ है। मैं उन्हें शत् शत् नमन करती हूँ और आज अपने छात्र–छात्राओं को वहीं शिक्षा देने का प्रयास करती हूँ जो मेरे गुरू श्री अवतार सिंह पंवार जी ने दी। शत् शत् नमन.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमर नाथ झा पुस्तकालय, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ।
2. राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0, लखनऊ।
3. ललित कला केन्द्र, अलीगंज, लखनऊ।
4. श्री कर्मवीर सिंह (मौखिक वार्ता)।

*****